विजातीय तत्वों के साथ संघर्ष का जो चित्र प्रस्तुत किया है, उसे आज अच्छी तरह से समझा जा सकता है और यह बात इस उपन्यास की प्रासंगिकता को और अधिक बढ़ा देती है।

रूसी उपन्यासों में भावों की गहराई और सामाजिक अन्तर्विरोधों और सामाजिक संघर्षों के भीतर झांकती गहरी अन्तर्दृष्टि की परम्परा को आस्त्रोवस्की इस उपन्यास में आगे ले जाते हैं। समाजवादी यथार्थवाद के प्रणेता गोर्की ने क्रान्ति पूर्व की अपनी रचनाओं में पावेल ब्लासोव एवं अन्य मजदूरों के रूप में जिस सर्वहारा नायक की रचना की थी, इसमें आस्त्रोवस्की ने नये गुणों का समावेश किया जिनका जन्म समाजवादी निर्माण के काल में, एक नये समाज में हुआ था। दिलचस्प बात यह है कि आस्त्रोवस्की साहित्यकार नहीं था, एक कम पढ़ा-लिखा आदमी था। पर जीवन और उसके सौन्दर्य से उसका इतने निकट का परिचय था कि पहली बार ही उसकी कलम से जीवन की पुनर्रचना समाजवादी यथार्थवाद की एक अनूठी कृति और विश्वसाहित्य की एक धरोहर बन गयी। जीवन के संघर्ष से किनारे रहकर जनता के लिये साहित्य-सृजन करने का मुगालता पालने वालों के लिये आस्त्रोवस्की का जीवन कृतित्व एक शिक्षा है।

अन्त में हम अपने पाठकों से जोर देकर कहना चाहेंगे कि वे इस उपन्यास को एक बार नहीं, कई बार पढ़ें जो उन्हें जीवन के आन्तरिक सौन्दर्य से क्रान्ति के संघर्ष में निहित अदम्य प्राणशक्ति से, समष्टि की अपार क्षमता और सृजनशीलता से, और आने वाले उस नये समाज से परिचित करायेगा जिसके लिये हमें अभी एक लम्बी लड़ाई लड़नी है। निश्चित तौर पर यह उपन्यास आपको संघर्ष करने की प्रेरणा और शक्ति देगा और यथास्थिति से विद्रोह करके जीने का सलीका सिखायेगा।

रपट : विचार गोष्ठी

नई सदी में नये वेग से परिवर्तन का ज्वार उठेगा

गोरखपुर। ''नई सदी साम्राज्यवाद के विध्वंस और बिस्मिल एवं उनके साथियों के सपनों को हक़ीक़त में तब्दील करने की सदी होगी। अभूतपूर्व ऐतिहासिक परिवर्तनों की इस सदी में मध्यवर्ग के युवा क्रान्तिकारी बुद्धिजीवी मेहनतकश अवाम के साथ खुद को जोड़ते हुए इतिहास द्वारा सौंपे गये कार्यभारों को पूरा करेंगे। ये विचार दिशा छात्र समुदाय द्वारा राम प्रसाद बिस्मिल के शहादत दिवस (19 दिसम्बर) पर आयोजित विचार-गोष्ठी में प्रमुखता से उभरकर सामने आये। इस विचार गोष्ठी का विषय था -- ''नई सदी में साम्राज्यवाद, बिस्मिल का अधूरा सपना और हम।''

विचार गोष्ठी के अध्यक्षीय वक्तव्य में **जनवादी लेखक संघ** के स्थानीय सचिव **प्रमोद कुमार** ने कहा कि साम्राज्यवादी प्रचार-तंत्र और साम्राज्यवाद प्रायोजित चिन्तकों द्वारा फैलायी जा रही वैचारिक धुंध और झूठे प्रचारों के बावजूद एक बेहतर इन्सानी दुनिया बनाने के सपने कभी मरेंगे नहीं।

अध्यक्षमंडल के दूसरे सदस्य **बिगुल मजदूर दस्ता** के साथी **आदेश सिंह** ने कहा कि साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण के मौजूदा नये दौर में दिखायी पड़ने वाली साम्राज्यवादी आक्रामकता सतह की सच्चाई है। सच्चाई यह है कि साम्राज्यवाद अपने आन्तरिक संकटों से दिन-ब-दिन खोखला होता जा रहा है और पतन की ओर अग्रसर है।

आदेश सिंह ने कहा कि भूमण्डलीकरण की आक्रामक नीतियों द्वारा साम्राज्यवादी ताकतें तीसरी दुनिया के शासक वर्गों के साथ सांठ-गांठ करके जो सामाजिक तबाही पैदा कर रही हैं उससे आने वाले दिनों में भीषण सामाजिक उथल-पुथल की भूमिका तैयार हो रही है। नई सदी में नये वेग से परिवर्तन का ज्वार उठेगा और इसके परिणामस्वरूप शोषण उत्पीड़न से मुक्त एक बिल्कुल भिन्न नयी दुनिया अस्तित्व में आयेगी। इतिहास के ज्ञान व आज के समय की सही पहचान से नई सदी की यही तस्वीर उभरती है।

नारी सभा की संयोजिका **मीनाक्षी** ने गोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि नई सदी में साम्राज्यवाद के ताबूत में आखिरी कील ठोंकने और बिस्मिल के अधूरे सपनों को पूरा करने का काम इस बात पर निर्भर करेगा कि हिन्दुस्तान का छात्र-नौजवान और मध्यवर्ग अपनी ऐतिहासिक जिम्मेदारी को निभाने के लिए कितनी जल्दी संकल्पबद्ध होता है।

फ़िल्म निर्देशक और मीडिया कर्मी **प्रदीप सुविज्ञ** ने आज के दौर में आम मध्यवर्गीय जीवन पर साम्राज्यवाद के सांस्कृतिक वर्चस्व के पड़ रहे गहरे प्रभावों का जीवन्त चित्र उपस्थित करते हुए कहा कि इसके खिलाफ सांस्कृतिक मुहिम तेज करनी होगी और लोगों को यह बताना होगा कि बिस्मिल एक ऐसा समाज बनाना चाहते थे ''जिसमें प्रकृति की देन पर सबका एक समान अधिकार हो और कोई किसी पर शासन न करे।'' सामाजिक कार्यकर्ता **स्वदेश कुमार** ने साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष में नये उपकरणों को गढ़ने की आवश्यकता रेखांकित की।

विचार गोष्ठी में हसन रज़ा रिजवी, एडवोकेट, ए० के० पाण्डेय, शरद चन्द्र मल्ल, सुनील चौधरी, माधवी मिश्र, मंजू तिवारी एवं अनिल कुमार ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

विचार गोष्ठी का विषय प्रवर्तन **दिशा छात्र समुदाय** की संयोजन समिति के सदस्य **राकेश कुमार** और संचालन **अरविन्द सिंह** ने किया।

● शालिनी

अन्याय के विरुद्ध विद्रोह न्यायसंगत है ! विद्रोह करना सीखो !! विद्रोह से क्रान्ति की ओर आगे बढ़ो !!!